डॉ० चन्दा कुमारी, गेस्ट टीचर,
हिन्दी विभाग, रोहतास महिला महाविद्यालय,
सासाराम, रोहतास

काव्य प्रयोजन

काव्य प्रयोजन :— 'काव्य रचना का उद्देश्य' / काव्य किस उद्देश्य से लिखा जाता है और किस उद्देश्य से पढ़ा जाता है इन दृष्टिगत रखकर काव्य प्रयोजनों पर कवि और पाठक की दृष्टि से विस्तृत विचार विमर्श काव्य शास्त्र में किया गया है क्योंकि काव्य प्रेरणा का अभिप्राय है काव्य की रचना के अन्दर प्राप्त होने वाले [illegible] है।

भरत मुनि :— नाट्य शास्त्र के रचयिता भरत मुनि ने नाटक के प्रयोजन पर विचार करते हुए कहते हैं कि काव्य का प्रधान उद्देश्य आनन्द प्राप्ति है जिसका उल्लेख यहाँ किया गया है। एक अन्य स्थान पर उन्होंने नाटक का उद्देश्य दुःखार्त व्यक्ति को सुख और शान्ति की प्राप्ति करना बताया है। नाटक काव्य का ही एक रूप है अतः भरतमुनि मत काव्य प्रयोजनों को स्वीकार किया जा सकता है।

भामह :— आचार्य भामह ने अपने ग्रंथ काव्यालंकार काव्य प्रयोजन की चर्चा करते हुए लिखा है।

धर्मार्थ काम मोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्ति प्रीतिं च साधुकाव्य निबन्धनम्॥

3. आचार्य वामन :— वामन के अनुसार

"काव्यं सद्दृष्टादृष्टार्थं प्रीति-कीर्ति हेतुत्वात्"

① अर्थात काव्य आनन्द साधना, जो काव्य का प्रमुख प्रयोजन है।

② कीर्ति अथवा यश प्राप्ति, जो काव्य का प्रमुख प्रयोजन है।

4. आचार्य कुन्तक :— वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य कुन्तक ने अपने ग्रन्थ 'वक्रोक्ति जीवित' में काव्य प्रयोजन का उल्लेख किया है। काव्य रूपी अमृत सहृदयों के अन्तःकरण में चतुर्वर्ग फल स्वाद से भी बढ़कर आकर उत्पन्न करने वाला होता है व्यवहार ज्ञान आनन्दोपलब्धि तथा पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि को काव्य प्रयोजन मानते हैं।

5. आचार्य मम्मट :— मम्मट ने अपने ग्रन्थ 'काव्यप्रकाश' में काव्य प्रयोजनों पर विस्तृत चर्चा की है; कि काव्य यश के लिए, अर्थ प्राप्ति के लिए, व्यवहार ज्ञान के लिए अमंगल शान्ति के लिए, अलौकिक आनन्द की प्राप्ति के लिए और कान्ता के समान मधुर उपदेश प्राप्ति के लिए प्रयोजन होते हैं।

निष्कर्ष :— काव्य प्रयोजन से सम्बन्ध में जो मत यहाँ व्यक्त किया गया है। उससे हम निम्न निष्कर्ष निकाल सकते हैं।

1. प्रत्येक व्यक्ति का काव्य प्रयोजन एक नहीं होता।
2. आनन्द प्राप्ति काव्य का प्रमुख प्रयोजन है जिसे रसानुभूति से प्राप्त किया जाता है।
3. यश प्राप्ति, अर्थ प्राप्ति, व्यवहार ज्ञान, अमंगल का विनाश लोक उपदेश भी काव्य प्रयोजन हैं।

Scanned with CamScanner